ISSN 2350 – 1065 MUKTANCHAL
वर्ष 12 अंक : 46, अप्रैल-जून 2025

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

# मुक्तांचल

विद्यार्थी मंच

मूल्य: 100 रुपये

## उस पार से...

**सआदत हसन मंटो**
(11 मई 1912-18 जनवरी 1955)

"ज़माने के जिस दौर से हम इस वक़्त गुज़र रहे हैं, अगर आप उससे नावाकिफ हैं तो मेरे अफ़साने पढ़िए। अगर आप इन अफसानों को बर्दाश्त नहीं कर सकते तो इसका मतलब यह है कि यह ज़माना नाकाबिले-बर्दाश्त है। मुझमें जो बुराइयाँ हैं, वो इस अहद की बुराइयाँ हैं। मेरी तहरीर में कोई नुक्स नहीं। जिस नुक्स को मेरे नाम से मंसूब किया जाता है, दरअस्ल मौजूदा निज़ाम का नुक्स है- मैं हंगामापसंद नहीं। मैं लोगों के खयालातों-जज़्बात में हेजान पैदा करना नहीं चाहता। मैं तहजीबो-तमद्दुन की और सोसायटी की चोली क्या उतारूँगा, जो है ही नंगी। मैं उसे कपड़े पहनाने की कोशिश भी नहीं करता, इसलिए कि यह मेरा काम नहीं लोग मुझे सियाह कलम कहते हैं, लेकिन मैं तख्ता-ए-सियाह पर काली चाक से नहीं लिखता, सफेद चाक इस्तेमाल करता हूँ कि तख़्ता-ए-सियाह की सियाही और ज़्यादा नुमायाँ हो जाए। यह मेरा खास अंदाज़, मेरा खास तर्ज है जिसे फहशनिगारी, तरक्कीपसंदी और खुदा मालूम क्या-क्या कुछ कहा जाता है-लानत हो सआदत हसन मंटो पर, कमबख्त को गाली भी सलीके से नहीं दी जाती।"

- दस्तावेज़ (1998)

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

# मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष : 12, अंक : 46, अप्रैल–जून 2025

संपादक : **डॉ. मीरा सिन्हा**
प्रकाशक : **विद्यार्थी मंच**
प्रबंध संपादक : **सुशील कुमार पांडेय**
कला संपादक : **शुभागता श्रीवास्तव**

**परामर्श एवं विशेष सहयोग :**

**पंकज साहा** : प्राक्तन प्राध्यापक, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
**कृष्ण कुमार** : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, बर्मिंघम, यू॰के॰
**अरुण कुमार** : प्राक्तन प्राध्यापक, राँची विश्वविद्यालय
**अमित राय** : एसोसिएट प्रोफेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता
**मृत्युंजय श्रीवास्तव** : संस्कृतकर्मी एवं विचारक
**प्रकाश कुमार अग्रवाल** : असिस्टेंट प्रो॰, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, प॰ बंगाल
**विनय कुमार मिश्र** : प्राध्यापक, बंगवासी कॉलेज
**चित्रा माली** : प्रभारी अकादमिक निदेशक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता
**विजया सिंह** : रानी बिड़ला गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
**विजय कु॰ साव (निशांत)** : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल
**उत्सव सिन्हा** : वर्चुअल प्रोडक्शन स्पेशियेलिस्ट, मुंबई

**व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :**
**विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित, नगीना लाल दास, प्रीति सिंह, अनीता ठाकुर एवं रुद्रकान्त झा,**

**संपर्क एवं प्रसार :**
विनोद यादव : 9007517546, पद्माकर व्यास : 9433196407
चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघन, यू॰के॰) : +447411412229
लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (*Unicode Word*) या (*Kurtidev010*) में भेजें।
पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

**पीयर रिव्यूड टीम :**

**डॉ॰ धूपनाथ प्रसाद** : प्राक्तन प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
**डॉ॰ विश्वजीत भद्र** : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)
**प्रो॰ मोहम्मद फ़रियाद** : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
**प्रो॰ मंजु रानी सिंह** : विश्वभारती, शांतिनिकेतन
**प्रो॰ अरुण होता** : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात
**प्रो॰ मनीषा झा** : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर - बंग विश्वविद्यालय
**डॉ॰ सत्या उपाध्याय** : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
**डॉ॰ अंजनी कुमार झा** : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)
**डॉ॰ शुभ्रा उपाध्याय** : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता
**डॉ॰ सुनील कुमार 'सुमन'** : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
**कानूनी सलाहकार** : एड॰ बृजेंद्र प्रताप सिंह, कलकत्ता हाईकोर्ट

**मुक्तांचल :** A/C- 50200014076551, HDFC Bank BURRABAZAR, KOLKATA-700007, IFSC CODE - HDFC0000219

**संपादकीय कार्यालय :**
आधुनिक अपार्टमेंट, ग्राउण्ड फ्लोर, 6/2/1, आशुतोष मुखर्जी लेन, सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल

**संपर्क करें :**
**डॉ॰ मीरा सिन्हा (संपादक) : 9831497320**
**सुशील कुमार पांडेय : 8820406080**

**कार्यालय प्रभारी :**
**बलराम साव : 8910783904**

**ई-मेल** muktanchalpatrika@gmail.com/ sinhameera48@gmail.com

**मुद्रक :** **गाथा प्रकाशन,** 6/2/1, आशुतोष मुखर्जी लेन, सलकिया, हावड़ा - 711106

**पत्रिका का मूल्य :** एक अंक - **100** रुपये
**सदस्यता शुल्क** : वार्षिक- **1000** रुपये, आजीवन- **5000** रुपये
**संस्थाओं के लिए :** वार्षिक-**1000** रुपये, आजीवन-**5500** रुपये
डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 45 रुपये।

# अवस्थिति


| | | | |
|---|---|---|---|
| शोध | 06 | संस्तुति | |
| | | **आलेख** | |
| | 07 | **धनेश दत्त पाण्डेय** | हिंदी कहानी नई-पुरानी : परंपरा और परिदृश्य |
| | 19 | **सुभाषचन्द्र गुप्त** | हिंदी-कहानी : मौजूदा परिदृश्य और पड़ाव |
| समीक्षण | 30 | **वरुण कुमार तिवारी** | फणीश्वरनाथ रेणु और सतीनाथ भादुड़ी की औपन्यासिक चेतना |
| | 37 | **अजीत कुमार दास** | प्रेमचंद की कहानियों में बाल मनोविज्ञान |
| | 44 | **राजेन्द्र सिंह गहलौत** | प्रेमचंद की रचनाओं में प्रतिबिंबित लोक जीवन |
| | | **अनुशीलन** | |
| | 50 | **मंजु रानी सिंह** | 'फुज्जार' पढ़ते हुए |
| | 53 | **योगेश तिवारी** | धूमिल |
| | 58 | **रेणु गुप्ता** | प्रकृति की रागात्मक कथा उर्वशी |
| | | **शोधार्थी की कलम से** | |
| सृजन | 61 | **पूनम प्रसाद** | 'स्वयं प्रकाश की कहानियों में जूनियर सिटीजन' |
| | 65 | **मनोहर कुमार कामती** | हिंदी कहानी आंदोलनों में यथार्थ चित्रण |
| | 68 | **श्वेता शर्मा** | 'फुज्जार' कहानी संग्रह : एक समीक्षात्मक विश्लेषण |
| | | **समय की शिला पर** | |
| | 72 | **अनीता वर्मा** | शब्दों में संसार : अनीता वर्मा की कविताओं का आत्मसंवाद |
| संचार | | **अंतरंग** | |
| | 76 | **विनोद साव** | विनोद कुमार शुक्ल सायास अनगढ़पन का सौंदर्य |
| | | **कहानी** | |
| | 80 | **सुषमा मुनीन्द्र** | धोबी पछाड़ |
| | 86 | **रजनी शर्मा** | भैंसामुंडा गायब |

## अवस्थिति

शोध

96 **रंजना अरगड़े** — दिन होती हुई रात

102 **सेराज खान बातिश** — एक चिड़िया का शोक गीत


### कविता

107 **सुधांशु कुमार मालवीय** — धार, चश्मा, पाँच उँगलियाँ, रफ्तार, सबसे अच्छे, तुम, यह पृथ्वी


समीक्षण

### साक्षात्कार

111 **मो॰ हारून रशीद खान** — 'क़फ़न' कहानी पर विवादों की परतें : डॉ॰ गोयनका का स्पष्टीकरण

115 **सुशील कुमार पाण्डेय** — कलकत्ता की गलियों से कथा संसार तक : सिद्धेश का रचनात्मक सफर


### यात्रा वृत्तांत

118 **पंकज साहा** — यह है मुंबई नगरिया


सृजन

### पुस्तकायन

125 **विनीता सिंह** — मनुष्यता को बचाने की कोशिश में : अरुण होता एक शिनाख्त

129 **प्रकाश कुमार अग्रवाल** — विराट जीवनानुभवों का ज्वलंत दस्तावेज : 'हमारे दरमियाँ'

133 **अभिमत** — डॉ॰ अरुण कुमार, डॉ॰ मंजु रानी सिंह, सेराज खान बातिस, डॉ॰ वरुण कुमार, डॉ॰ प्रकाश कुमार अग्रवाल,


संचार

137 **गतिविधियाँ** — मुक्तांचल के 45वें अंक का विमोचन, साहित्य और संस्कृति पर चर्चा

मुक्तांचल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

मटियाबुर्ज कॉलेज, हिंदी विभाग द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्चस्व की आँधी चल रही है और घटनाएँ दुर्योग की शिकार बन रही हैं तथा दुर्घटनाओं की शृंखला लंबी होती जा रही है। आदमी विश्वास खो रहा है– सामूहिक हत्या और आत्महत्या का सिलसिला जारी है। साहित्य सर्जन का संसार अफवाहों एवं कुत्साओं के शिकंजे में दम तोड़ रहा है। कुछ अच्छा नहीं दिखता, लेकिन बुरा आकर्षित करता है; सौम्य और सुंदर गायब है– अपवाद भीड़ खींच रहा है। ऐसे में 'एडजस्टमेंट' की समस्या भयंकर रूप ले रही है, क्योंकि पिछड़ापन नई पोशाक धारण कर आगे-आगे चल रहा है और हमारी प्रगति सिसक रही है। एक ऐसा समय जब झूठ ने सच को मात दे दिया है, जब इतिहास को अपदस्थ कर मिथकीय कथा-कहानियों ने लोगों को भ्रमित कर दिया है। सत्य की परछाहीं धुँधली होती जा रही है। इतिहास को पुराण और पुराण को इतिहास बताकर प्रसारित करना विज्ञान सम्मत नहीं हो सकता। जीवन और जगत में अज्ञानता का अंधकार लाने के लिए इतिहास पर मनमाने हमले जरूरी हैं, और आज की वर्चस्ववादी ताकत वही कर रही है।

शिक्षा और साहित्य का संसार भी कुछ इबारतों तो कुछ जुमलों में सिमटता जा रहा है। उसमें जानकारियों और सूचनाओं का पिटारा धर दिया गया है। साहित्य के विद्यार्थी उस 'मैजिक बॉक्स' से प्रश्नों का उत्तर जुगाड़ लेते हैं और मुट्ठी भर कर अंक उन्हें हासिल हो जाते हैं। विचार एवं विश्लेषण की कोई जरूरत नहीं होती– शोधार्थी भी आसान सा विषय लेकर बड़ी आसानी से शोध की सनद प्राप्त कर लेते हैं। संपूर्ण वातावरण 'खानापूर्ति' अथवा 'येन-केन-प्रकारेण' की प्रवृति से भरा हुआ है। खींच-तान कर वह मुकाम पा ही लेता है जहाँ से सेल्फी वाली जीवनशैली चहुँ ओर हो गई है। सिनेमाई जिंदगी की ललक उनमें अधिक है जिसके पास कभी कुछ नहीं रहा है। रोग की तरह संवाद 'वायरल' हो रहे हैं। टीआरपी का जमाना है। संक्रमित हो रही हैं अनर्गलताएँ एवं विद्रुपताएँ। ऐसे में साहित्यिक सर्जना का मुकाम कहाँ और किधर ठहर रहा है इसकी पड़ताल जरूरी है।

वस्तुतः आज का विचारवान आदमी कहीं ठहर कर सोचने लगता है, ख़लिल ज़िब्रान के 'मैड मैन' की तरह अलग-थलग, क्योंकि उसकी ताकत उसे बाढ़ में बह जाने से टोकती रहती है। आज की स्थिति में जीवन दायिनी सरिता की सुंदर धार नहीं के बराबर है। आतंक हो या त्रास सब कुछ को टाल ले जाने की प्रवृति में हम केवल 'इंज्वाय' करते रहते हैं– और यही हमारी संस्कृति बन चुकी है।

फिलहाल, मुक्तांचल के माध्यम से कथा-संवाद का सिलसिला शुरू किया गया है। बात शुरू हुई है तो चल निकलेगी, इसका भरोसा भी है और विश्वास भी। अगला अंक सामान्य अंक होगा। आप अपने सृजन, विचार, विश्लेषण एवं मत-अभिमत से मुक्तांचल-47 को समृद्ध बनाएँ। मुक्तांचल -48 अर्थात 'अक्तूबर-दिसंबर 2025' का अंक एक महत्वपूर्ण विशेषांक होगा जो सुप्रसिद्ध कथालोचक एवं साहित्यकार मधुरेश के संपूर्ण लेखन संसार पर आलोक पात करेगा, इस अंक के अतिथि संपादक जाने-माने कथाकार, आलोचक एवं संपादक धनेश दत्त पांडेय होंगे। उम्मीद है इस महत अंक में आपकी भी लेखकीय भागीदारी रहेगी।

**- संपादक**